

इस उपन्यास में तोताराम और रुक्मिणी देवी वृद्धावस्था में आकर भी सुखद जीवन के लिए संघर्ष करते दिखते हैं। दोनों को परिवार का सुख नहीं मिला। तोताराम ने बुढ़ापे में विवाह किया, परन्तु अपने से बहुत कम उम्र की लड़की से किया, जिसके कारण उन्हें पछताना पड़ा। रुक्मिणी देवी ने बुढ़ापे में आराम के बजाय अर्थिक तंगी और पारिवारिक कलह का सामना करना पड़ा। 'गोदान' 1936 ई० में प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास है। गोदान को हिंदी साहित्य का महाकाव्य कहा जाता है। प्रेमचंद ने भारतीय मूल आत्मा को इस उपन्यास में चित्रित किया है। यह उपन्यास साहित्य जगत की चुनौतियों पर खरा उतरता है।" इस उपन्यास में उन्होंने वृद्ध होरी तथा भारत के अन्नदाताओं किसानों के जीवन की समस्याओं को सार्थक रूप में चित्रित किया है। होरी ने जीवनभर संघर्ष किया परन्तु फिर भी जमींदार से किया कर्जा न चुका सका। अन्त में होरी की मृत्यु हो जाने के बाद होरी की पत्नी धनिया पंडित से कहते हुए दिखाई देती है, होरी के नाम का गोदान कर दीजिए।^४

हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचंद का नाम अग्रणीय रहता है। इन्होंने सामाजिक समस्याओं को अपने कथा साहित्य में स्थान दिया। ऐसी ही एक समस्या वृद्ध जीवन की है जिसका चित्रण प्रेमचंद के साहित्य में देखने को मिलता है। "वृद्ध महिलाओं में बूढ़ी काकी, विध्वंस की भुनगी, बेटों वाली विधवा की फूलमती और सुभागी की माँ अपने ही परिवार द्वारा अपमानित, प्रताड़ित और शोषित होती दिखती है। वहीं मन्त्र कहानी का भगत अस्सी वर्ष की अवस्था में भी निःस्वार्थ सेवा और कर्तव्य के प्रति समर्पित भाव रहता है।"^५

निष्कर्ष:-

प्रेमचंद के उपन्यासों में वृद्ध पात्रों की बहुलता देखने को मिलता है। जिसके उदाहरण स्वरूप पात्र 'कर्मभूमि' उपन्यास के समरकान्त, पठानिन और रेणुका देवी हैं। 'निर्मला' उपन्यास में अर्धेड उम्र में वृद्ध विवाह करके तोताराम समस्या ग्रस्त पात्र बन जाता है। वहीं रुक्मिणी देवी कम उम्र में विधवा होकर संघर्षमय जीवन बिता रही हैं। 'गोदान' का होरी राम किसान जीवन में मेहनत, मजदूरी करता वृद्ध है, जो वृद्धावस्था के दौरान भी कर्ज में डूबा हुआ और जमीन बचाने के लिए संघर्ष करता दिखता है।

प्रेमचंद ने समय - सापेक्ष अपनी रचनाओं में वृद्धजन की स्थिति की चर्चा कर अपने साहित्यकार होने का प्रमाण दिया है। प्रेमचंद आदर्शोन्मुखी - यथार्थ के लेखक हैं। फलतः उन्होंने अपने साहित्य में वृद्धजन की समस्या को उजागर करके नैतिक और आदर्शवादी समाधान भी सुझाया है। आज हमारे समाज में वृद्धजन के प्रति उदासीनता और उपेक्षा की भावना बढ़ती जा रही है। अतः प्रेमचंद की रचनाओं में उद्धृत वृद्ध विमर्श वर्तमान समय में भी महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है।

संदर्भ :-

1. सहायक प्राध्यापक हिंदी, रामजयपाल महाविद्यालय, धपरा।
2. हिन्दी कथा साहित्य में वृद्धावस्था का यथार्थ - डॉ० अंकिता शर्मा, पृ० 77
3. कर्मभूमि - प्रेमचंद, पृ० - 88
4. हिन्दी कथा साहित्य में वृद्धावस्था का यथार्थ - डॉ० अंकिता शर्मा, पृ० 83
5. हिन्दी कथा साहित्य में वृद्धावस्था का यथार्थ - डॉ० अंकिता शर्मा, पृ० 95

बालको के विकास में बाल पत्रकारिता का योगदान

डॉ.शशि प्रभा जैन

प्रोफेसर

अविनाश लिंगम विश्वविद्यालय कोयम्बतूर

शोध का सार - बालक देश के दर्पण होते हैं। वे राष्ट्र की मुस्कराहट हैं। बालकों में वर्तमान करवटें लेता है और भविष्य के बीज उसी में बोये जा सकते हैं। पत्रकारिता का मूल उद्देश्य सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनोरंजन करना है। इन तीन उद्देश्यों में सम्पूर्ण पत्रकारिता का सार तत्व समाहित किया जा सकता है। अतः हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हमें अपने वर्तमान और भविष्य को स्वर्णिम और सुखमय बनाना चाहिए, जिससे हमारा देश संसार में आदर्श बन सके। बालक की उन्नति ही समाज और देश की उन्नति है।

मूल शब्द- पत्रकारिता, बालक, समाज, दायित्व, जागृति, भविष्य, मार्गदर्शन

पत्रकारिता समाज के विचारों का प्रतिबिम्ब है और साहित्य की संवाहिका है, जो समाज और साहित्य के इतिहास में अपना विशेष स्थान बनाकर उसका निर्माण करती है। ग्रांटों में समाहित साहित्य से जो संभव नहीं था वह आज पत्र-पत्रिकाओं के साहित्य ने कर दिखाया है। पत्रकारिता रोज रोज लिखा जाने वाला इतिहास है। पत्रकारिता का मूल उद्देश्य "अन्याओं और बेईमानी का उद्घाटन कर, दोषों, कर्मियों, खामियों को उजागर करना, सलाह मशवरा देना और असहाय की सहायता करना और लोगों को मार्गदर्शन करना।" इस तरह रहस्योद्घाटन पत्रकारिता की धड़कन बन जाता है, क्योंकि वे घटनाएँ घटती तो हैं, लेकिन जिन्हे कोई वर्ग व्यक्तिगत हितों के कारण छिपाना चाहता है, उन्हे भी पत्रकारिता उजागर करती है।

पत्रकारिता सम्प्रेषण का सामाजिक माध्यम है। इस वैज्ञानिक युग में पत्रकारिता जनता को दुर्घटनाओं के माध्यम से सचेत करती है और मनोरंजन भी करती है। पूरे समाज की समस्त घटनाओं को प्रतिबिम्बित कर यह स्वयं समाज से प्रभावित भी होता है और समाज को प्रभावित करता ही है। वास्तव में पत्रकारिता वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में सूचनाएं और जानकारियाँ एकत्र करते हैं, जिसे स्वयं के प्रयासों से भी जान नहीं सकते।

जीवन की यह वह अवस्था है जिसमें बच्चा अपने माता-पिता, शिक्षक और चारों तरफ के परिवेश से ही सीखता है। यही वह उम्र होती है जिसमें बच्चे के मास्तिष्क पर किसी भी घटना या सूचना की आमिष छाप पड़ जाती है। बच्चे के आस-पास की परिवेश उसके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पत्रकारिता का मूल उद्देश्य सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनोरंजन करना है। इन तीन उद्देश्यों में सम्पूर्ण पत्रकारिता का सार तत्व समाहित किया जा सकता है। महान शिक्षाविदों का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रटें क्षमता को बढ़ाना न होकर छात्रों की मौलिकता व सृजनात्मकता का विकास होना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि बाल पत्रिका इस दिशा में एक अभिन कदम उठाएगी।

परिभाषाएं – मानवीय स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की आकांक्षा, सामाजिक आदर्शों के लिए लक्ष्य एवं समर्पण तथा विशाल विश्व में अपनी पहचान एवं अस्मिता को बनाय रखने की भावना का परिणाम ही पत्रकारिता है।

- “पत्रकारिता वह धर्म है, जिससे वह तात्कालिक घटनाओं का सबसे अधिक सही और निष्पक्ष विवरण पाठकों के समक्ष उपस्थित करें।” --डॉ. भवरखुराना
- “टूटे दिलों को जोड़ना पत्रकारिता का सबसे बड़ा दायित्व होता है।” – भजनलाल, जनसत्ता, 26 दिसम्बर 1992

पत्रकारिता भारतीय जनता तक सूचना और ज्ञान पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचारों से लेकर स्थानीय कहानियों तक, पत्रकारिता नागरिकों को उन घटनाओं के बारे में सूचित रखती है जो उनके जीवन को प्रभावित करती हैं।

पत्रकारिता का स्वरूप किस रूप में सामने आये जिसके दवा वह अपने लक्ष्य तक पहुंच सके, इस दिशा पत्रकारिता के कुछ शाश्वत धर्म ही उसके स्वरूप को उदघाटित कर सकते हैं, वे इस प्रकार हैं-

दस धर्म * सामाजिक चेतना का दर्पण, * सूक्ष्म पर्यवेक्षण, * नीर-क्षीर विवेक, * मूल्य की नियामिका, * परिवेश से सम्प्रक्ति, * वैविध्यपूर्ण व्यापक क्षेत्र, * समाज की सुधारवादी दृष्टि, * सम्प्रेषण का माध्यम, * प्रेरणा और जागरूकता, * आधुनिक जीवन की दिशा निर्देशिका

पत्रकारों की अभिव्यक्ति का शक्ति एवं लोकप्रिय साधन है क्योंकि यह समस्त बुनियादी मूद्दे को जनता के सामने बड़ी कलात्मकता से रखती है। जनता को सूचित कर उनका मार्ग दर्शन भी करती है। किसी भी प्रणाली को सुचारू रूप से चलाने के लिए पत्रकारिता का होना आवश्यक है।

समाचार पत्र एक” सी निवृत्ति मिशन कार्य है। समाज की कुरीतियों, त्रुटियों एवं आडम्बर पूरण कार्यों का पर्दाफाश कर उन्हें सुधरने का दायित्व भी निभाता है। समाचार पत्र सरकार की नीतियों, गतिविधियों एवं त्रुटियों को विश्लेषित करते हैं जिससे जनजीवन को पूर्णतः ज्ञानत रहे किसकार की नीतियों का अनुसरण कर रही है। यह सुधारों को सामने लाकर उन्हे विकसित करने का प्रयास करती है। पत्रकारिता के विविध रूपों में से एक रूप है- **बाल पत्रकारिता।**

बाल पत्रकारिता -

बालक देश के दर्पण होते हैं। वे राष्ट्र की मुस्कराहट हैं। बालकों में वर्तमान करवटें लेता है और भविष्य के बीज उसी में बोये जा सकते हैं। बालक में सम्यक विकास के लिए बाल पत्रकारिता अत्यंत उपादेय है। बच्चों में अनंत

जिज्ञासा होती है, वे दुनिया के हर विषय के हर तथ्य को जानने हेतु लालायित रहते हैं। उनकी जिज्ञासा की शांति के लिए रंग-बिरंग, मनोरंजक रूप में उन्ही की भाषा में पत्र-पत्रिकाएं निकल रही हैं। वयस्क की भाषा और वयोवृद्ध पत्रकार बालकों की रुचियों और उनकी अकम्पाओं के अनुरूप पत्र सम्पादित करते हैं। बाल पत्रों के पत्रकार को सर्वज्ञ और एक शुद्ध बालक होना पड़ता है। “बल सखा,” शिशु बालक”, “पराग”, “नंदन”, “चंदामामा”, आदि पत्रों ने बच्चों की गतिविधियों पर प्रकाश डाला है।

“A book is a Guide, Friend, and a Philosopher.” यह कथन बाल-पत्रकारिताओं के लिए उपयुक्त है। पत्रिकाएं “ एक ऐसा उत्तम अस्त्र है, जो बालकों को सही दिशा दिखाती है। दुनिया भर के विषय उपलब्ध कराकर उन्हे शिक्षित करती है। बच्चों का मस्तिस्क एक “बचत खाता”, के सामान होता है। वह जो कुछ सीख लेता है उसे

जीवन में उतार लेता है। बढ़ते बच्चों में इस प्रक्रिया का विकास करना बहुत जरूरी है, और सही जानकारी समय-समय पर भी देना आवश्यक है। इस कार्य के लिए बाल पत्रकारिता अपनी सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभाती है।

एक पत्रकार की दुनिया पूरा समाज होता है जिसकी अपेक्षा और आवाज वह होता है। पत्रकार एक ऐसा मंच होता है जहां आम आदमी अपनी पीड़ा और तकलीफ लेकर बिना किसी औपचारिकता के वह पहुंच जाता है। पीड़ित व्यक्ति को न तो कोई फीस देनी होती है और न मिलने का समय पहले से तय करना होता है। पत्रकार पीड़ित की बात सुनता और समझता है तथा वह उन सबसे से सवाल करने पहुंच जाता है। तथ्य और तर्क के साथ वह खबर की शक्ति में समस्या को समाज के समक्ष रखता है। पत्रकार के प्रयासों से पीड़ित को राहत मिल जाती है और उसका विश्वास पत्रकारिता पर बढ़ जाता है। पत्रकारिता की यही पूंजी है और पत्रकार का यही सुख कि वह एक व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कराहट देख सका। यह जब्बा आप बाल पत्रकारों में महसूस कर सकते हैं। वे समाज की आवाज उठा रहे हैं। वे पीड़ितों की आवाज बने हुये हैं।

पत्रिकाएं क्यों पढ़ते हैं बालक?-

बालक पत्रिका को आनंद और मनोरंजन के लिए पढ़ता है। वह ईएसआई पत्रिका पढ़ना चाहता है, जो दिमाग पर बोझ न बने बल्कि उसकी बोरियत कम करे। पत्रिका को कही भी पढ़ा जा सकता है और अपनी सुविधानुसार नहीं पढ़ सकता है।

समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं का मूल उद्देश्य सदैव जनता की जागृति और जनता तक विचारों का सही संप्रेषण करना रहा है। महात्मा गांधी की पंक्तियाँ हैं : समाचार पत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना है।

पत्रकारिता के प्रमुख कार्य:-

पत्रकारिता आधुनिक सभ्यता का एक प्रमुख व्यवसाय है। जिसमें समाचारों का एकत्रीकरण, लिखना, जानकारी एकत्र करके पहुंचाना, संपादित करना और समय से प्रस्तुतीकरण करना आदि सम्मिलित है। आज की युग में पत्रकारिता के अनेक माध्यम हो गए हैं। जैसे, अखबार, पत्रिकाएं, रेडियो, दूरदर्शन, वेब पत्रकारिता आदि।

पत्रकारों के अधिकार:-

प्रेस का अधिकार ऐसा अधिकार है, जो किसी भी नागरिक को व्यक्तिगत रूप में प्रदान किया जाता है। प्रेस का संपादक या प्रबंधक जब भी समाचार पत्र के लिए लिखता है, तो, इसे वह एक नागरिक की हैसियत से उपलब्ध अधिकार का प्रयोग करते हुये, लिखता है।

पत्रकारिता का उद्देश:-

पत्रकारिता का मूल उद्देश सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनोरंजन करना है। इन तीनों उद्देश्यों में संपूर्ण पत्रकारिता का सारतत्व समाहित किया जा सकता है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण पत्रकारिता व्यक्ति और समाज के जीवन को गहराई प्रभावित करती है।

पत्रकारिता का महत्त्व कई तरह से होता है-

- पत्रकारिता जनता को सूचित और शिक्षित करती है।
- पत्रकारिता लोकतंत्र का कायम रखती है और अभिव्यक्ति की आजादी की रक्षा करती है।
- पत्रकारिता नागरिकों को सशक्त बनती है और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देती है।
- पत्रकारिता इतिहास को रिकॉर्ड करती है।

- पत्रकारिता, किसी व्यक्ति या संघटन के बयानों या कार्रवाई से जनता को गुमराह होने से रोकती है।
- पत्रकारिता सार्वजनिक महत्त्व की जानकारी एकत्र करने, रिकॉर्ड करने, सत्य स्थापित करने और उस पर रिपोर्ट करने का अभ्यास है।
- पत्रकारिता “बेजुबानों की आवाज़” के रूप में कार्य करती है, जो हमारे समाज के सभी सदस्यों के विचारों को व्यक्त करती है।
- पत्रकारिता समाज की दिग्दर्शिका और नियामिका है।

बालकों का विकास – जनसंचार माध्यम से लाभ – मनोरंजन, सूचना, शिक्षा, और सामाजिक ज्ञान एवं व्यक्तित्व का विकास बालकों को सर्वांगी विकास होता है। उनका सामान्य ज्ञान बढ़ाती है। विविध प्रकार की शिक्षाएं प्रदान करती है – जैसे- पहेलियाँ, खेल – क्रियाएं, कागज की। कलाकृतियाँ आदि नीतियों की जानकारियाँ बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। यह विचारों का अदन – प्रदान करता है।

यह बौद्धिक और शारीरिक विकास में अपना व्यापक रूप निभाती है। विविध चित्रों से इनका मनन जीत लेते हैं। इन्हें नए शब्द, विचारों और भाव भी सीखते हैं। कहानियों से नए अनुभव लेते हैं। शिल्प कला, वैज्ञानिक क्रियाएं, क्रियात्मक खेल, और अनेक क्रिया-कलाप से उनके शारीरिक और भावात्मक विकास में पत्रिकाएं सराहनीय भूमिका निभाती हैं। अतः स्पष्ट है कि जनसंचार माध्यम बालकों के विकास में सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभाती है।

बाल विकास के अध्ययन से बालक के व्यक्तित्व का विकास सरलता से किया जा सकता है। बालक में अनेक क्षमताएं एवं शक्तियां पाई जाती हैं। तभी उचित दिशा में विकसित होती है। जब बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाओं का ज्ञान अभिभावक को होता है।

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। इनका सम्पूर्ण विकास करना अत्यंत आवश्यक है। बालकों को शिक्षित करना, दिशा देना, उनकी रुचियों को परिष्कृत करना और उनका विकास करना। बाल पत्रकारिता निरक्षरता हटाने, सामाजिक कुरीतियां

मिटने, अन्दिश्र्वास दूर करने तथा विश्व भर में भाईचारा बढ़ाने में उपयोगी है। बच्चे गंभीर और उत्सुख पाठक होते हैं। इसलिए जिम्मेदारी दगनी बढ़ जाती है, किस तरह के चित्र और सामग्री का प्रयोग करना चाहिए।

भारत की बाल पत्रकारिता में ज्यादातर पश्चिमी संस्कृति पर ज्यादा बल दिया जाता है। जिससे बालक भारत की संस्कृति से अपरिचित ही रह जायगा। इसमें सुधार लाना चाहिए। बाल पत्रकारिता में कम लेखक पाए जाते हैं। सरकार को वरीयता देनी चाहिए। इसलिए हमारा कर्तव्य है बनना है कि वे राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय संपत्ति अपनी संस्कृति तथा अन्य विचारों के अंकुर रोपने के लिए बल-पत्रिकाओं को वरीयता दे, तो विकास, के स्तर पर पहुँच सकता है। इसके लिए हमें परिश्रम करना चाहिए।

**“श्रम ही से सब मिलता है,
बिना श्रम मिली नकाही।”**

अतः हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हमें अपने वर्तमान और भविष्य को स्वर्णिम और सुखमय बनाना चाहिए, जिससे हमारा देश संसार में आदर्श बन सके। बालक की उन्नति ही समाज और देश की उन्नति है। बालकों के अन्दर **आत्म विश्वास के लक्षण** होने चाहिए ताकि वे अपना कार्य सुदृढ़ता से निभा सकें और उत्कृष्ट भविष्य को बनाने में सफल हो सकें। बालकों की नींव पक्की हो तो महल बिना संदेह के मजबूत और स्थाई दृष्टिकोण वाला, संस्कारयुक्त, एवं संकल्प पूर्ण संस्कृति युक्त होगा।

आत्म विश्वास के लक्षण	अहंकार के लक्षण
मैं अच्छा हूँ। मैं हार नहीं सकता। हर मुकाबले के लिए तैयार हूँ। सफलता की ओर कदम	1. मैं ही अच्छा हूँ। 2. मुझे कोई हरा नहीं सकता। 3. मेरा कोई मुकाबला ही नहीं है। *विनाश की ओर कदम

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पत्रकारिता के विविध आयाम, डॉ. उ. क. गुप्ता, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, न्यू डेल्ही।
2. आधुनिक पत्रकारिता, अर्जुन तिलारी, वाणी प्रकाशन, न्यू डेल्ही।
3. पत्रकारिता के विविध रूप, डॉ. रामचंद्र तिवारी, राजकमल प्रकाशन न्यू डेल्ही।
4. पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त, गोपाल शर्मा, (२०००) वाणी प्रकाशन, न्यू डेल्ही।
5. समकालीन हिंदी-पत्रकारिता, में नारी-सन्दर्भ (२००७) रमेश कुमार त्रिपाठी, नमन प्रकाशन, डेल्ही।